an>

Title: The Minister of External Affairs made a statement regarding 'Sydney Host Crisis'.

विदेश मंत्री तथा प्रवासी भारतीय कार्य मंत्री (श्रीमती सुषमा स्वराज) : अध्यक्ष महोदया, धन्यवाद। मुझे कल जानकारी मिली कि माननीय सदस्य श्री मल्लिकार्जुन खड़गे जी ने यह मांग की थी कि सिडनी के बंधक संकट के बारे में सरकार कुछ जानकारी दे। उसी संबंध में मैं वक्तव्य देने के लिए उपस्थित हुई हूं, लेकिन चूंकि कल एक और घटना पेशावर में घट गई, जिसके बारे में अभी आपने सदन से प्रस्ताव पारित कराया है, उसके बारे में भी एक पैराग्राफ मैंने इसमें जोड़ दिया है। मैं आपकी अनुमति से ये वक्तव्य पढ़ना चाहती हूं।

महोदया, आतंकवाद ने 15 दिसम्बर, 2014 को एक बार फिर अपना खौफनाक चेहरा दिखाया, जब हथियारों से लैस एक व्यक्ति ने सिडनी, आस्ट्रेलिया में 17 लोगों को बंधक बना लिया। बंधक बनाने की यह घटना सिडनी के व्यस्ततम हिस्से सेंट्रल बिजनेस डिस्ट्रिक्ट के मार्टिन प्लेस में स्थित लिंट कैफ में वहां के स्थानीय समय प्रातः 0945 पर घटी। इस कैफे में बंधकों में दो युवा भारतीय आईटी प्रोफेशनल श्री पुष्पेन्दु घोष और श्री विश्वकांत अंकिरेड्डी भी शामिल थे। ये वहां इंफोसिस के लिए वेस्टपैक बैंक के एक प्रोजेक्ट पर कार्य करते हैं, जो इस कैफे के नजदीक है। श्री घोष एक भारतीय नागरिक हैं और श्री अंकिरेड्डी भारतीय मूल के आस्ट्रेलियाई नागरिक हैं।

हमारी सरकार श्री घोष और श्री अंकिरेड्डी की सुरक्षा के लिए आस्ट्रेलियाई सुरक्षा एजेंसियों के साथ लगातार संपर्क में थी। प्रधानमंत्री जी स्वयं पूरी स्थिति पर नजर रखे हुए थे और लगातार निगरानी कर रहे थे। हमने समय रहते आस्ट्रेलियाई एजेंसियों को महत्वपूर्ण सूचना उपलब्ध कराई जिससे उनकी पहचान हो सकी और उनकी सुरक्षा पर नजर बनाये रखी जा सकी। अध्यक्ष जी, मैंने स्वयं दिन में दो बार श्री अंकिरेड्डी की पत्नी से बात की और उन्हें हमारी सरकार की ओर से उनके पति की सुरक्षा के प्रति आश्वस्त किया। हम आस्ट्रेलिया और भारत में स्थित इंफोसिस के कार्यालयों के भी लगातार संपर्क में थे।

यह बंधक संकट 14 घंटे के बाद 16 दिसम्बर को स्थानीय समय प्रातः 2 बजे समाप्त हुआ। दोनों भारतीयों को सकुशल बचा लिया गया और उनका स्वास्थ्य ठीक है। हम संकट की इस घड़ी में उनकी बहादुरी की प्रशंसा करते हैं। हम श्रीमती शिल्पा अंकिरेड्डी की बहादुरी की भी प्रशंसा करते हैं जिन्होंने संकट की इस घड़ी में कभी आशा नहीं छोड़ी और पूरे धैर्य से काम लिया।

जैसे ही बंधक बनाने की यह घटना प्रकाश में आई हमने सिडनी स्थिति हमारे कौंसलावास में स्थित कर्मचारियों की सुरक्षा को स्थानीय सुरक्षा एजेंसियों के साथ मिलकर सुनिश्चित किया। हमारा कौंसलावास इस घटनास्थल से मात्र 350 मीटर की दूरी पर स्थित है। कौंसलावास को तुरंत ही बंद कर दिया गया, लेकिन वीजा, पासपोर्ट, ओ.सी.आई. और पी.आई.ओ. कार्ड की कौंसलर सेवाओं को घटनास्थल से सुरक्षित दूरी पर जारी रखा गया।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने कल आस्ट्रेलियाई प्रधानमंत्री टोनी एबट से बात की और बंधक संकट से निपटने और बंधकों की रिहाई के लिए उनके कुशल नेतृत्व के लिए उन्हें धन्यवाद दिया। प्रधानमंत्री जी ने दो निर्दोष बंधकों की मृत्यु पर उनके परिवारजनों के प्रति भी गहरी संवेदना प्रकट की।

माननीय अध्यक्ष महोदया, सिडनी में हुई यह घटना विश्व में कहीं भी हो रहे आतंकवाद के खतरे के प्रति सरकारों, समाज और व्यक्तियों के लिए एक चेतावनी है। हम स्वयं वर्ष 2001 में हमारे लोकतंत्र के इस मंदिर, संसद, पर हुए आतंकवादी हमले के शिकार रहे हैं। हमारी सरकार सभी प्रकार के आतंकवाद से लड़ने के प्रति दृढ़ प्रतिज्ञ है जिससे हम शांतिपूर्ण और समरस समाज में रहते हुए उन्नति कर सकें।

अध्यक्ष जी, अभी पूर्व में सिडनी मे हुई घटना की गूंज थमी भी नहीं थी कि हमारे पश्चिम में पेशावर में हाल ही के दिनों का सबसे वीभत्स कत्लेआम देखने को मिला। इस अपराध का विकराल स्वरूप इस कायराना कत्लेआम से पता चलता है, जिसमें कल, इसमें 130 लिखा है, इसे 132 पढ़ा जाए, 132 मासूम स्कूली बच्चों और 9 अन्य लोगों की निर्दयता के साथ हत्या कर दी गई। सारे विश्व ने इसकी निंदा की है।

हमारी सरकार ने तुरंत कड़े शब्दों में इस आतंकवादी हमले की निंदा की। जब प्रधानमंत्री जी ने इस कायरानापूर्ण आतंकी हमले को निरर्थक अवर्णनीय निष्ठुर हरकत कहा, उस समय वह समूचे देश की भावना को व्यक्त कर रहे थे। संकट के इस समय में हमने सीमाओं और विवादों से ऊपर उठकर शोक संतप्त परिवारों के प्रति अपनी गहरी संवेदना व्यक्त की और उन तक अपनी संवेदना पहुंचाई। प्रधानमंत्री मोदी जी ने देर रात स्वयं पाकिस्तान के प्रधानमंत्री नवाज शरीफ से बात की और उन्हें बताया कि भारत के लोग इस हृदयविदारक समय में पाकिस्तान के लोगों और शोक संतप्त परिवारों के दर्द और उनके अवसाद में बराबर के साझीदार हैं और संकट के इस समय में उनके साथ एकजुटता के साथ खड़े हैं।

महोदया, पिछले दो दिनों की घटनायें दो अलग महाद्वीपों में हुई हैं, दो अलग-अलग गोलार्धों में हुयी हैं, हमारे पूर्व और पश्चिम में हुई हैं, हताशा से भरी ये दोनों घटनाएं हमें आतंकवाद का काला चेहरा दिखाती हैं। इन दोनों घटनाओं को मिलाकर देखा जाए तो वह मानवता में विश्वास रखने वाले सभी लोगों के लिए एक पुकार है कि वह मिलकर आतंकवाद का सूमल नाश करें। भारत इस विश्वव्यापी मुहिम में अपनी भूमिका अदा करने के लिए सदा तैयार है।

धन्यवाद।

माननीय अध्यक्ष : क्लेरिफिकैशन नहीं होता है।

श्री मल्लिकार्जुन खड़गे (गुलबर्गा) : मैडम, क्लेरिफिकैशन नहीं है। यहां पर थोड़ा करैक्शन की जरूरत है। अगर आप पेज - 2 के पैराग्राफ - 2 पढ़ेंगे, उसमें यह लिखा है कि "The enormity of this crime; the cowardly nature of the massacre; the barbaric brutality of killing of more than 130 innocent school childrenâ€¦"

माननीय अध्यक्ष : वह तो उन्होंने बता दिया है।

श्री मल्लिकार्जुन खड़गे : हमने तो क्लीयरली बता दिया कि 132 बच्चे और 9 स्टाफ मैम्बर्स, जो टीचर्स हैं।...(व्यवधान) बच्चों के बारे में ही आया है उसी में इंक्लूड करके फैक्चुअल होना चाहिए।...(व्यवधान) दोनों मिला कर लिखा गया है तो ठीक है।

माननीय अध्यक्ष : 9 अन्य सदस्य लिखा गया है।

â€¦(व्यवधान)

श्री मल्लिकार्जुन खड़गे : 130

श्रीमती सुषमा स्वराज : मैंने कहा है कि 130 को 132 पढ़ा जाए और अन्य 9 सदस्य लिखा हुआ है। ...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : उसमें करैक्शन कर देना है, वैसे भी आपने बोल दिया है।

...(व्यवधान)

HON. SPEAKER: It is okay.

...(*Interruptions*)

माननीय अध्यक्ष : आयटम नम्बर 11, डॉक्टर जितेन्द्र सिंह, मेक ए स्टेटमेन्ट।